15-वीर अभिमन्यु

महाभारत का युद्ध चल रहा था। महाराज युधिश्ठिर के लिए यह दुविधा से भरा समय था, जिसमें वह कोई निर्णय नहीं ले पा रहे थे। कौरवों के सेनापति गुरु द्रोणाचार्य ने अपने युद्ध कौषल से चक्रव्यूह की रचना की थी, जिसे तोड़ने की सामथ्र्य केवल अर्जुन में ही थी।

ऐसे समय में अभिमन्यु महाराज युधिश्ठिर के सामने पहुँचे और चरण स्पर्श कर पूछा-"आप इस तरह सोच में क्यों डूबे हैं तातश्री! युद्ध के क्या समाचार हैं ?" "समाचार अच्छे नहीं हैं, पुत्र! लेकिन तुम क्यांे चिंता करते हो ? हम लोग तो हैं ही," युधिश्ठिर ने कहा। "मुझे भी बताइए न!" अभिमन्यु ने आग्रह किया। युधिश्ठिर बोले-"अभी तक हम कौरव सेना पर लगातार विजय प्राप्त कर रहे थे। यह तो तुम जानते ही हो कि तुम्हारे पिताश्री अर्जुन कौरव वीर संसप्तक से युद्ध करते-करते बहुत दूर निकल गए हैं। ऐसे समय में हमें पराजित करने के लिए दुर्योधन ने गुरु द्रोणाचार्य से चक्रव्यूह की रचना कराई है, जिसे भेदना केवल अर्जुन को ही ज्ञात है।"

"तो इसमें चिंता की क्या बात है ?" अभिमन्यु ने पूछा।

युधिश्ठिर ने चिंतित होते हुए कहा-"तुम नहीं जानते पुत्र कि चक्रव्यूह तोड़ना कितना कठिन है? व्यूह में सात द्वार होते हैं और हर द्वार को तोड़ने की एक विषेश विधि होती है। हममें से तुम्हारे पिताश्री के अलावा और कोई भी चक्रव्यूह को भेदना नहीं जानता है। यदि हम कल चक्रव्यूह को भेदने में असफल रहे तो हमारी हार हो जाएगी।"

“आप क्यों चिंता करते हैं? तातश्री! मुझे युद्ध में जाने की आज्ञा दें, मैं चक्रव्यूह तोड़ दूँगा,“ अभिमन्यु ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया। युधिश्ठिर के लिए यह उत्तर अप्रत्याषित था। उन्होंने आष्चर्य से पूछा-

“तुमने चक्रव्यूह भेदने की विद्या कब सीखी ?“

“तातश्री! एक बार पिता जी ने माँ से चक्रव्यूह तोड़ने का वर्णन किया था। उस समय मैं माँ के गर्भ में था और यह वर्णन सुनकर मैंने यह विद्या सीख ली लेकिन जब अंतिम द्वार तोड़ने का वर्णन आया, तभी माँ को नींद आ गई और पिता जी ने वर्णन सुनाना बंद कर दिया जिससे मैं चक्रव्यूह का अंतिम द्वार भेदने की विधि नहीं सीख सका,“ अभिमन्यु ने उत्तर दिया।

“चक्रव्यूह के अंतिम द्वार को तो मैं अपनी गदा से ही तोड़ दूँगा,“ भीम ने गदा घुमाते हुए गरजकर कहा। अब युधिश्ठिर के सामने धर्म-संकट था। बालक अभिमन्यु को वह युद्ध में कैसे जाने दें! अभिमन्यु ने उन्हें असमंजस में देखकर आष्वस्त किया-

“तातश्री! जब षत्रु ललकार रहा हो तो हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना कायरता है। मैं वीर पुत्र हूँ और मेरा कर्तव्य यही कहता है कि षत्रु की चुनौती का मुकाबला डटकर किया जाए।“ अभिमन्यु का आत्मविष्वास देखकर युधिश्ठिर ने अभिमन्यु को युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी।

युद्ध का उद्घोश हो गया था। प्रत्येक द्वार की रक्षा में एक महारथी था। चक्रव्यूह के प्रथम द्वार पर गुरु द्रोणाचार्य खड़े थे। अभिमन्यु ने उनके चरणों में बाण छोड़कर प्रणाम किया। द्रोणाचार्य अभिमन्यु को देखकर समझ गए कि पांडवों को हराना आज आसान नहीं होगा। सामने कौरव सेना का रचा चक्रव्यूह था। इधर अभिमन्यु थे। उनके पीछे भीम और दूसरे पांडव वीर थे। अभिमन्यु ने बाणों की बौछार करते हुए चक्रव्यूह का पहला द्वार तोड़ दिया। कौरव सेना के लिए यह चैंकाने वाला हमला था। भीम ने द्रोणाचार्य के रथ को उठाकर घोड़ों समेत आकाष में फेंक दिया।

चक्रव्यूह के अगले द्वार पर जयद्रथ था। जयद्रथ को लगा कि एक बालक उसके सामने युद्ध में कितनी देर टिक पाएगा लेकिन थोड़ी ही देर में जयद्रथ को लगने लगा कि इस वीर बालक को रोकना उतना आसान भी नहीं है, जितना वह समझ रहा है।

जयद्रथ को आखिरकार मुँह की खानी पड़ी। अभिमन्यु ने दूसरा द्वार भी तोड़ दिया और अगले द्वार की ओर बढ़ गए लेकिन जयद्रथ ने भीम और अन्य पांडव वीरों को आगे बढ़ने से रोक दिया। अभिमन्यु अब अकेले पड़ गए लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। कौरव सेना के हाथी, घोड़े, पैदल सैनिक अभिमन्यु के बाणों के आगे गिरने लगे। अभिमन्यु के पराक्रम ने कौरव सेना के पैर उखाड़ दिए थे। कौरवों को विष्वास ही नहीं हो रहा था कि एक बालक उनकी इतनी विषाल सेना पर भारी पड़ जाएगा।

कौरव सेना में हाहाकार मच गया। दुर्योधन ने देखा कि चक्रव्यूह का अंतिम द्वार भी टूटने ही वाला है। पराजय को निकट देखकर दुर्योधन ने अनीति का सहारा लिया। दुर्योधन के कहने पर कौरव सेना के सातों महारथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिया। वीर अभिमन्यु इस मुष्किल समय में भी हौसला नहीं हारे। उनका सारथी कौरव सेना का षिकार हो गया। अभिमन्यु

का धनुश भी काट दिया गया लेकिन अभिमन्यु रथ के पहिए को हथियार बनाकर सबसे मोर्चा लेते रहे। उन्होंने कौरव सेना से जूझते हुए सेनापति द्रोणाचार्य की ओर मुड़कर कहा-“गुरुवर, आपके होते हुए यह कैसी अनीति है! यह युद्ध का नियम नहीं है, जिसमें निहत्थे पर वार होता है।“

द्रोणाचार्य दुर्योधन के अधीन थे। उनके पास अभिमन्यु के प्रष्न का कोई उत्तर न था। अचानक दुःषासन के पुत्र ने पीछे से अभिमन्यु के सिर पर गदा से वार किया। अभिमन्यु

वीरगति को प्राप्त हुए लेकिन जीते-जी उन्होंने हार नहीं मानी। उनकी वीरता की कहानी सदैव अमर रहेगी।

अभ्यास

शब्दार्थ-

आकाश = आसमान

निहत्था = जिसके हाथ में कोई

वीरगति = युद्ध में वीरतापूर्वक अस्त्र-शस्त्र न हो लड़ते हुए मारा जाना

सारथी = रथ हाँकने वाला

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) पांडवों और कौरवों का युद्ध किस नाम से प्रसिद्ध है ?

(ख) युधिष्ठिर क्यों चिंतित थे ?

(ग) अभिमन्यु ने गुरु द्रोणाचार्य को कैसे प्रणाम किया ?

(घ) चक्रव्यूह के भीतर अभिमन्यु के साथ दूसरे पांडव वीर क्यों न जा सके?

(ङ) अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदने की विधि कैसे सीखी ?

2. किसने, किससे कहा ?

- "आप इस तरह सोच में क्यों डूबे हैं तातश्री! युद्ध के क्या समाचार हैं ?"
- "तुम नहीं जानते पुत्र कि चक्रव्यूह तोड़ना कितना कठिन है ?"
- "अंतिम द्वार को तो मैं अपनी गदा से ही तोड़ दूँगा।"

- ”गुरुवर आपके होते यह कैसी अनीति है!’’

3. सोच-विचार: बताइए -

- अभिमन्यु के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?
- इस युद्ध में आपके विचार से क्या गलत हुआ और क्यों ?

4. भाषा के रंग -

(क) नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

- बाणों की बौछार करना
- खलबली मचाना
- सिर नीचा होना
- खुशी का ठिकाना न रहना

(ख) नीचे लिखे शब्दों के समानार्थक शब्द बताइए -

कठिन, आकाश, युद्ध, शत्रु, अलावा, धरती, आज्ञा, प्रण, बाण, जीव, नींद, कहानी

(ग) नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

अभिमन्यु ने कहा तातश्री मैं भी वीर पुत्र हूँ

समाचार अच्छे नहीं हैं पुत्र लेकिन तुम क्यों चिंता करते हो

तातश्री मैं वीरपुत्र हूँ शत्रु ललकारे और मैं बैठा रहूँ यह कैसे हो सकता है

(घ) पढ़िए, समझिए -

समास-विग्रह सामासिक पद , समास-विग्रह सामासिक पद

वीर का पुत्र = वीरपुत्र , राजा और रानी = राजा-रानी

राजा का पुत्र = राजपुत्र , रात और दिन = रात-दिन

वीरों की गति = वीरगति ,राम और लक्ष्मण = राम-लक्ष्मण

देवताओं का लोक = देवलोक , अंदर और बाहर = अंदर-बाहर

आप लिखिए -

समास-विग्रह सामासिक पद ,समास-विग्रह सामासिक पद

गहृ का स्वामी = ...

आगे और पीछे = ...

राष्ट्र का ध्वज = ...

ऊपर और नीचे = ...

वन में वास = ...

माता और पिता = ...

पुष्पों की वर्षा = ...

हम और तुम = ...

5. **आपकी कलम से -**

आपके आस-पास भी किसी बच्चे ने विपत्ति के समय बहादुरी का परिचय दिया होगा। वह घटना कैसे घटी अपने शब्दों में लिखिए।

6. **अब करने की बारी-**

(क) कहानी का कक्षा में अभिनय कीजिए।

(ख) इसी प्रकार की वीरता की कहानियाँ पुस्तकालय से पढ़िए।

7. मेरे दो प्रश्न: कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइए -

8. **इस कहानी से** -

(क) मैंने सीखा - .....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - .....

यह भी जानिए -

युधिष्ठिर ने अभिमन्यु से कहा - " लेकिन तुम अभी बालक हो, हम तुम्हें युद्ध में कैसे भेज सकते हैं?"

इस वाक्य में युधिष्ठिर एवं अभिमन्यु (नाम) का प्रयोग हुआ है। " किसी वस्तु, व्यक्ति एवं स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं, जैसे- गीता, रमेश, मोहन, मथुरा, प्रयाग, मेज, कलम' आदि।

इसी वाक्य में अभिमन्यु (नाम) की जगह पर 'तुम' और 'तुम्हें' का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार युधिष्ठिर की जगह 'हम' सर्वनाम शब्द का प्रयोग हुआ है। किसी नाम या संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं, जैसे - मैं, तुम, हम, आप, मेरा, तुम्हारा, आपका, उसका, उसे आदि।